International Journal for Multidisciplinary Research (IJFMR)
E-ISSN: 2582-2160 ● Website: www.ijfmr.com ● Email: editor@ijfmr.com

वृद्ध-विमर्श के परिपेक्ष में कृष्ण बलदेव वैद कृत नाटक 'अंत का उजाला'

रमन कुमार शर्मा[1], एवं प्रो. (डॉ.) सुनील कुमार[2]

[1]शोधार्थी, हिन्दी विभाग, गुरु नानक देव विश्वविद्यालय, अमृतसर
[2]शोध निर्देशक, हिन्दी विभाग, गुरु नानक देव विश्वविद्यालय, अमृतसर

सारांश

भारतीय सांस्कृतिक परंपरा में प्राचीन काल से ही वृद्धों को समादरणीय मार्गदर्शक का स्थान प्राप्त रहा है। भारतीय संस्कृति में माता-पिता को भगवान के समान माना गया है। यही कारण है कि संतान प्राप्ति के लिए लोग ऋषि-मुनियों के आशीर्वाद हेतु यज्ञ और तपस्या किया करते थे तथा संतानें भी माता-पिता की आज्ञा को सर्वोपरि मानकर अपने सुख-सुविधाओं का त्याग कर देती थीं। भारतीय इतिहास और पुराणों में अनेक ऐसे उदाहरण मिलते हैं, जहाँ पुत्रों ने माता-पिता की सेवा और सम्मान के लिए राजसिंहासन तक छोड़ दिया तथा उन्हें तीर्थ-यात्राओं पर अपने कंधों पर बैठाकर ले गए। हमारे शास्त्र और लोकपरंपराएँ भी बुजुर्गों के सम्मान, अनुभव और ज्ञान की महत्ता को रेखांकित करती हैं। परिवार के महत्वपूर्ण निर्णय उनके अनुभव और दूरदर्शिता के आधार पर उनकी सहमति से लिए जाते थे। इसी कारण वृद्धजन परिवार और समाज में संस्कारों, नैतिक मूल्यों तथा जीवनानुभव के प्रमुख स्रोत माने जाते थे। किन्तु आधुनिकता, नगरीकरण, भौतिकवाद और पाश्चात्य संस्कृति के प्रभाव ने पारिवारिक मूल्यों को गहराई से प्रभावित किया है। आज की पीढ़ी संबंधों और पारिवारिक उत्तरदायित्वों की अपेक्षा व्यक्तिगत स्वतंत्रता और स्वार्थ को अधिक महत्व देने लगी है। परिणामस्वरूप वृद्धजन उपेक्षा, अकेलेपन, असुरक्षा और मानसिक पीड़ा का जीवन जीने को विवश हो रहे हैं। अनेक बुजुर्ग अपने ही परिवारों में बोझ समझे जाने लगे हैं, जिससे वृद्धाश्रमों की संख्या और उनमें रहने वाले वृद्धों की तादाद निरंतर बढ़ती जा रही है। वास्तव में वृद्धावस्था केवल जैविक परिवर्तन की अवस्था नहीं है, बल्कि यह सामाजिक, आर्थिक और मनोवैज्ञानिक चुनौतियों से भी गहराई से जुड़ी हुई है। इस अवस्था में व्यक्ति शारीरिक रूप से कमजोर और कई बार दूसरों पर निर्भर हो जाता है, फिर भी बुजुर्ग समाज के लिए अनुभव, संस्कृति, नैतिकता और जीवन-मूल्यों के अमूल्य भंडार होते हैं। यदि उन्हें उचित सम्मान, स्नेह और सहयोग प्राप्त हो, तो वे समाज को सकारात्मक दिशा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं। हिंदी साहित्य में उभरता 'वृद्ध विमर्श' इसी सामाजिक यथार्थ को केंद्र में रखता है। यह विमर्श किसी एक वर्ग तक सीमित न होकर समाज के सभी वृद्धजनों की समस्याओं, उनकी उपेक्षा, मानसिक संघर्ष, अकेलेपन और सामाजिक असुरक्षा को अभिव्यक्ति प्रदान करता है। साथ ही, यह समाज को संवेदनशील बनाते हुए वृद्धों के प्रति सम्मान, सहानुभूति और उत्तरदायित्व की भावना जागृत करने का कार्य भी करता है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 भी चरित्र निर्माण, मानवीय मूल्यों और पारिवारिक संवेदनाओं पर बल देते हुए वृद्धों के प्रति सम्मान और संवेदना विकसित करने की आवश्यकता को रेखांकित करती है। इस प्रकार 'वृद्ध विमर्श' केवल साहित्यिक विमर्श नहीं, बल्कि मानवीय संवेदनाओं और सामाजिक चेतना से जुड़ा एक महत्वपूर्ण सामाजिक सरोकार बनकर उभरता है।

मूल शब्द : वृद्ध विमर्श, हाशियाकृत समुदाय, भूमंडलीकरण, उत्तर आधुनिकता, भौतिकतावादी दृष्टिकोण, अंत का उजाला, शिक्षा नीति 2020.

वृद्धावस्था का अर्थ

वृद्धावस्था मानव जीवन की वह स्वाभाविक और अंतिम अवस्था है, जो आयु बढ़ने के साथ धीरे-धीरे आती है। यह कोई बीमारी नहीं, बल्कि प्रकृति की निरंतर चलने वाली प्रक्रिया है। इस अवस्था में व्यक्ति के शरीर, मन और कार्यक्षमता में परिवर्तन आने लगते हैं; शारीरिक क्षमताएँ कुछ कम होती हैं, जबकि अनुभव, मानसिक परिपक्वता और जीवन-ज्ञान में वृद्धि होती है। सामान्यतः 60 वर्ष या उससे अधिक आयु को वृद्धावस्था माना जाता है। अत: कहा जा सकता है कि वृद्धावस्था एक तरफ शारीरिक दुर्बलता का प्रतीक कही जाती है, तो दूसरी तरफ यह जीवन के लंबे अनुभव, सामाजिक जिम्मेदारियों, धैर्य और परिपक्वता का द्योतक भी है।

लोकभारती राजभाषा शब्दकोष (अंग्रेज़ी-हिंदी) के अनुसार- वृद्ध का अर्थ **'old person'1** होता है। **अंग्रेजी हिंदी कोश** के अनुसार वृद्ध शब्द को 'ओल्ड' (**old**) शब्द का हिंदी पर्याय माना जाता है। ओल्ड का अर्थ "**बूढ़ा, वृद्ध, पुराना**"**2** आदि होता है।

इस प्रकार 'वृद्ध' शब्द का अर्थ पका हुआ, अनुभवी और परिपक्व व्यक्ति माना जा सकता है। इस अवस्था में व्यक्ति को परिवार और समाज से सम्मान, सहयोग तथा संवेदनशील व्यवहार की आवश्यकता होती है। परंतु आज के आधुनिक समाज में परिवार की स्थिति ऐसी हो गई है कि वृद्धों को अपने ही पारिवारिक सदस्यों, अपनी ही संतानों से प्रताड़ित होना पड़ता है परिणाम स्वरूप वृद्ध बेसहारा होकर या तो वृद्धाश्रम में रहने को मजबूर है या फिर तीर्थयात्रा जैसा विकल्प चुनने को। कभी-कभी तो स्थिति इतनी गंभीर हो जाती है कि उन्हें आत्महत्या जैसा दुखद कदम उठाने तक के लिए विवश होना पड़ता हैं। यह स्थिति केवल पारिवारिक विघटन ही नहीं, बल्कि मानवीय संवेदनाओं के क्षरण का भी गंभीर संकेत है।

विमर्श का अर्थ

विमर्श आधुनिक हिन्दी साहित्य और समाजशास्त्र का एक महत्त्वपूर्ण शब्द है। इसका अर्थ किसी विषय पर गंभीर चिंतन, विचार-विवेचन, बहस तथा उसके विभिन्न पक्षों का विश्लेषण करना होता है। अंग्रेज़ी भाषा में इसके लिए *Discourse* या *Consultation* शब्द का प्रयोग किया जाता है। संस्कृत की *'मृश्'* धातु में 'वि' उपसर्ग से बने इस शब्द का आशय किसी समस्या, परिस्थिति या सामाजिक यथार्थ को समझने और उसकी गहराई तक पहुँचने से है। **लोकभारती राजभाषा शब्दकोष** (हिंदी-अंग्रेजी) के अनुसार विमर्श का '**अर्थ पूर्ण चिंतन**'**3** आदि होता है। साहित्य में विमर्श केवल सामान्य चर्चा नहीं, बल्कि सामाजिक, सांस्कृतिक और मानवीय प्रश्नों पर संवेदनशील तथा वैचारिक चिंतन की प्रक्रिया है। उत्तर-आधुनिक हिन्दी साहित्य में विमर्श की प्रवृत्ति ने विशेष महत्त्व प्राप्त किया है, क्योंकि इसके माध्यम से समाज में चेतना जागृत करने और उपेक्षित वर्गों की समस्याओं को सामने लाने का प्रयास किया जाता है।

वृद्ध-विमर्श

वृद्ध-विमर्श वह संवेदनशील चिंतन, अध्ययन और सामाजिक चर्चा है जिसके अंतर्गत वृद्ध व्यक्तियों के जीवन से जुड़ी सामाजिक, आर्थिक, शारीरिक, मानसिक तथा पारिवारिक परिस्थितियों का गहन विश्लेषण किया जाता है। इसमें वृद्धों की समस्याओं जैसे – उपेक्षा, अकेलापन, असुरक्षा, पारिवारिक विघटन, आर्थिक निर्भरता तथा बदलते सामाजिक मूल्यों के कारण उत्पन्न चुनौतियों पर विचार करते हुए उनके सम्मान, अधिकार, सुरक्षा और गरिमापूर्ण जीवन के लिए समाधान खोजने का प्रयास किया जाता है। दूसरे शब्दों में, वृद्ध विमर्श केवल वृद्धावस्था की कठिनाइयों का वर्णन मात्र नहीं है, बल्कि यह समाज में वृद्धों की स्थिति को समझने, उनके अनुभवों और योगदान को स्वीकार करने तथा उनके प्रति संवेदनशील और उत्तरदायी दृष्टिकोण विकसित करने से है।

मूल आलेख / विषय विश्लेषण

भारतीय ज्ञान परंपरा के संवाहक हमारे शास्त्र, वेद तथा संत-ऋषियों की वाणी सदैव बुजुर्गों के आदर, सेवा और सम्मान का संदेश देती रही है। इसी कारण भारतीय संस्कृति में प्राचीन काल से ही माता-पिता और वृद्धजनों को परिवार तथा समाज में सर्वोच्च सम्मान का अधिकारी माना गया है। हमारे संस्कारों में उन्हें केवल जन्मदाता ही नहीं, बल्कि जीवन के प्रथम गुरु, मार्गदर्शक और अनुभव के अमूल्य स्रोत के रूप में प्रतिष्ठित किया गया है। प्रत्येक धर्म और परंपरा में भगवान के पश्चात माता-पिता को सबसे ऊँचा स्थान प्रदान किया गया है, क्योंकि उनके त्याग, प्रेम और आशीर्वाद से ही मानव जीवन का निर्माण और संस्कारों का विकास संभव होता है, परंतु 21वीं सदी में आधुनिक जीवन शैली, भौतिकवाद और पश्चिमीकरण के प्रभाव से संयुक्त परिवार प्रणाली कमजोर हो गई है। नैतिक मूल्य और पारंपरिक संस्कार लगातार क्षीण होते जा रहे हैं। भूमंडलीकरण और बाजारवाद ने रिश्तों तथा सामाजिक मूल्यों को प्रभावित किया है, जिसके कारण परिवार संस्था सबसे अधिक संकटग्रस्त हुई है। एकल परिवारों में वृद्ध व्यक्ति बोझ समझे जाने लगे हैं। आज अनेक वृद्ध माता-पिता अपने ही घर में उपेक्षा, तिरस्कार और परायेपन का अनुभव कर रहे हैं। जिस घर को माता-पिता ने अपने परिश्रम, त्याग और प्रेम से सींचा होता है, उसी घर से उन्हें दूर रहने के लिए विवश होना पड़ता है। उनके लिए घर केवल रहने का स्थान नहीं होता, बल्कि वह उनके जीवन-भर के संघर्ष, स्मृतियों और भावनाओं का संसार होता है। वे अपनी अंतिम साँसें भी अपने परिवार के बीच लेना चाहते हैं, किंतु परिवार के कठोर व्यवहार के कारण उनकी यह इच्छा अधूरी रह जाती है। आज अनेक वृद्ध ऐसे हैं, जो एकाकी जीवन जीने को अभिशप्त हैं। उनकी सुध लेने वाला कोई नहीं होता। वे अपने ही परिवारजनों के एक फोन, एक पत्र, एक संदेश अथवा थोड़े-से स्नेह के लिए तरसते रहते हैं। उनकी पीड़ा और प्रतीक्षा को कृष्ण बलदेव वैद द्वारा रचित नाटक "अंत का उजाला" में अत्यंत मार्मिक रूप से अभिव्यक्त किया गया है, जहाँ 'बीबी' अपने मियाँ से कहती है— "आज भी कोई फ़ोन नहीं आया कोई ख़त कोई ईमेल कोई पार्सल चेक कोई ख़बर तार अफ़वाह इशारा आदेश।" 4

यह संवाद केवल एक पात्र की व्यथा नहीं, बल्कि उस समूचे हाशियाकृत वृद्ध समुदाय की करुण पुकार है, जो अपनों के होते हुए भी अकेलेपन, उपेक्षा और संवेदनहीनता का जीवन जीने को विवश है। यह उस अंतहीन प्रतीक्षा का चित्र है, जो कभी समाप्त नहीं होती। चूँकि माँ का हृदय ममता और भावनाओं से इतना विशाल होता है कि वह इस प्रतीक्षा को ही अपने जीवन का आधार और उद्देश्य मान लेती है; किंतु पिता जीवन की कठोर वास्तविकताओं को शीघ्र पहचान लेता है। उसे समझ आ जाता है कि अब यह प्रतीक्षा केवल प्रतीक्षा बनकर रह जाएगी, जिसका कोई अंत नहीं। यही गहरी निराशा, टूटन और जीवन के अंतिम सत्य का बोध नाटक के मियाँ पात्र के इन मार्मिक शब्दों में व्यक्त होता है—"हमें नहीं सिर्फ़ तुम्हें मुझे अब सिर्फ़ अंत का इंतज़ार है।"**5**

मियाँ का यह संवाद वृद्धावस्था की उस त्रासदी को अत्यंत संवेदनात्मक ढंग से उद्घाटित करता है, जहाँ अपनी संतान के होते हुए भी जीवन आशा नहीं, बल्कि अंत की प्रतीक्षा में बदल जाता है। वे केवल अपने बच्चों के लौटने की राह ही नहीं देखते, बल्कि निरंतर इस भय और चिंता से भी घिरे रहते हैं कि यदि उनमें से किसी एक को कुछ हो गया, तो शेष जीवन कैसे कटेगा। नाटक में मियाँ का एक अन्य संवाद इस पीड़ा को और अधिक गहराई प्रदान करता है— "तुम भी यही सोचती हो जानता हूँ अगर तुम पहले चली गई तो मैं क्या करूँगा किसको आवाज़े दूँगा पूछूँगा कैसी हो अपने डर से कैसे निबटूँगा डॉक्टर कहता है, हम दोनों के एक ही दिन चले जाने की सम्भावना सिफ़र बराबर एक ही क्षण चल देने की तो सिफ़र से भी कम।"**6**

इस प्रकार वृद्धावस्था उनके लिए जीवन का आनंद नहीं, बल्कि असुरक्षा, निर्भरता और भावनात्मक पीड़ा से भरा हुआ संघर्ष बन जाती है। उपेक्षा, अकेलेपन और असहायता की यह स्थिति कभी-कभी उन्हें इस हद तक तोड़ देती है कि वे यह सोचने पर विवश हो उठते हैं कि काश प्रकृति ने मनुष्य के लिए ऐसी व्यवस्था की होती जिससे वे इस असहनीय पीड़ा और अपमान से भरे जीवन का अंत अपनी इच्छा से कर सके। नाटक में मियाँ का प्रस्तुत संवाद इसी गहरे मानसिक द्वंद्व, निराशा और जीवन से उपजी वितृष्णा की ओर संकेत करता है।—- "होना यह चाहिए था कि जब बूढ़ों का जी चाहे वे जीना बंद कर दे कुछ खाए पिए किए बग़ैर बस चाहने भर से बूढ़ों के लिए ऐसी व्यवस्था क़ुदरत को कर देनी चाहिए थी।"**7**

ऐसी व्यवस्था न होने के कारण, अथवा आत्महत्या के लिए साहस न जुटा पाने की विवशता में, यह पीड़ा भीतर ही भीतर आक्रोश का रूप धारण कर लेती है। यह आक्रोश कभी संतानों, कभी समाज और कभी स्वयं सृष्टि के रचयिता तक के प्रति विद्रोह बनकर फूट पड़ता है। 'बीवी' का प्रस्तुत संवाद इसी असहाय क्रोध, गहन टूटन और मानसिक संताप की मार्मिक अभिव्यक्ति है।— "यह गुस्सा क्यों अचानक किसी पर उस ऊपर वाले पर अगर वह है तो उठा क्यों नहीं लेता अब क्यों बूढ़े खेल खेल रहा है हम बूढ़ों से अब ले क्यों नहीं लेता जाने क्यों एड़ियाँ रगड़वा रहा है रिरियवा रहा है सता रहा है आज़मा रहा है वह कुछ भी नहीं कर रहा मैं जानती हूँ।"**8**

वास्तव में 'बीवी' का यह आक्रोश उस समूचे वृद्ध वर्ग की पीड़ा का प्रतिनिधित्व करता है, जो जीवन के अंतिम पड़ाव पर सम्मान, सहारा और आत्मीयता के अभाव में भीतर ही भीतर बिखरता चला जाता है। वृद्धावस्था में एक समय ऐसा भी आता है, जब उन्हें यह कटु सत्य स्वीकार करना पड़ता है कि उनकी संतानें अब उनसे भावनात्मक संबंध बनाए रखना नहीं चाहतीं और उन्हें अपनी शेष जीवन-यात्रा अकेले ही तय करनी होगी। नाटक में मियाँ का प्रस्तुत संवाद इसी गहन असहायता, टूटन और एकाकीपन की ओर संकेत करता है— "तो हम मान लेंगे वे हमसे ऊब गए और अब हम दोनों को उनके बग़ैर अकेले ही जीना मरना है।"**9**

यह संवाद केवल एक वृद्ध दंपति की अंतिम व्यथा नहीं, बल्कि उस सामाजिक संवेदनहीनता पर तीखा प्रश्नचिह्न है, जहाँ व्यक्ति को उसके मानवीय अस्तित्व से नहीं, बल्कि उसकी उपयोगिता से आँका जाता है। यह आज के समाज का कटु सत्य है कि "समाज में जब व्यक्ति का योगदान रहा तब तक वह समाज का अभिन्न अंग बना रहा, और जैसे ही बूढ़ा हो गया वह समाज से कट गया और केवल एक वस्तु बनकर रह गया। ऐसी वस्तु जिसका न कोई मोल है और न किसी काम का है और न ही कुछ पैदा कर सकने योग्य।"**10** यह स्थिति केवल पारिवारिक विघटन का परिणाम नहीं, बल्कि मानवीय मूल्यों के निरंतर ह्रास का दुष्परिणाम है। ऐसी परिस्थितियों में राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 का महत्व और भी अधिक बढ़ जाता है। यह नीति केवल विद्यार्थियों को ज्ञान और व्यावसायिक कौशल प्रदान करने तक सीमित नहीं है, बल्कि उनके चरित्र के समग्र निर्माण पर भी विशेष बल देती है। नीति का उद्देश्य ऐसी पीढ़ी का निर्माण करना है जो संवेदनशील, सहानुभूतिशील, नैतिक एवं सामाजिक उत्तरदायित्व से युक्त हो। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 शिक्षा को केवल रोज़गार प्राप्ति का माध्यम न मानकर मानवता, नैतिकता और सामाजिक चेतना से जोड़ती है, ताकि विद्यार्थी परिवार, समाज और विशेष रूप से वृद्धजनों के प्रति अपने दायित्वों को समझ सकें।

आज वृद्धावस्था से जुड़ी समस्याएँ केवल किसी एक परिवार, समाज या राष्ट्र की समस्या नहीं रह गई हैं, बल्कि संपूर्ण विश्व के सामने उपस्थित एक गंभीर मानवीय और सामाजिक प्रश्न बन चुकी हैं। बदलती जीवन-शैली, बढ़ता भौतिकवाद और संबंधों में आती संवेदनहीनता ने वृद्ध-विमर्श को समकालीन समाज का महत्वपूर्ण विषय बना दिया है। ऐसे समय में राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 नई पीढ़ी को भारतीय सांस्कृतिक मूल्यों, मानवीय संवेदनाओं और पारिवारिक उत्तरदायित्वों से जोड़ने का महत्वपूर्ण प्रयास करती दिखाई देती है, जिससे समाज में वृद्धों के प्रति सम्मान, अपनत्व और सहअस्तित्व की भावना पुनः स्थापित हो सके।

निष्कर्ष

वैश्वीकरण और तीव्र आधुनिकता के प्रभाव से आज समूचा विश्व निरंतर परिवर्तन के दौर से गुज़र रहा है। इस परिवर्तन ने जहाँ विकास और प्रगति के नए आयाम स्थापित किए हैं, वहीं मानवीय एवं पारंपरिक मूल्यों के क्षरण की समस्या भी उत्पन्न कर दी है। इसका प्रत्यक्ष प्रभाव पीढ़ियों के पारस्परिक संबंधों और पारिवारिक संरचना पर पड़ा है, जिसके कारण परिवारों में तनाव, विघटन और वृद्धों के प्रति उपेक्षापूर्ण दृष्टिकोण बढ़ता जा रहा है। आज वृद्धावस्था की सबसे बड़ी पीड़ा अनुपयोगिता का एहसास है; जब परिवार और समाज वृद्धों के अनुभव, विचार और जीवनानुभवों को महत्व नहीं देते, तब वे स्वयं को समाज की व्यर्थ इकाई समझने लगते हैं। इसी सामाजिक यथार्थ को हिन्दी नाट्य साहित्य ने 'वृद्ध विमर्श' के रूप

में गंभीरता से अभिव्यक्त किया है। समकालीन हिन्दी नाटककारों में कृष्ण बलदेव वैद का नाटक अंत का उजाला में वृद्धों की पीड़ा, अकेलेपन, मानसिक संघर्ष और सामाजिक उपेक्षा का मार्मिक चित्रण करते हुए समाज को संवेदनशील बनने का संदेश दिया है। यह विमर्श केवल वृद्धों की समस्याओं का चित्रण नहीं, बल्कि उनके अनुभव, संस्कार और सामाजिक उपयोगिता को पुनः स्थापित करने का प्रयास भी है। भारत सरकार ने भी इस समस्या की जड़ को पहचानते हुए राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में शिक्षा के साथ चरित्र निर्माण और नैतिक मूल्यों पर विशेष बल दिया है, ताकि समाज में संवेदनशीलता और पारिवारिक उत्तरदायित्व की भावना विकसित हो सके। वास्तव में, वृद्ध विमर्श आज के समय की अनिवार्य आवश्यकता है, क्योंकि वृद्धों के अनुभव और संस्कार ही युवा पीढ़ी को जीवन मूल्यों के विघटन से बचा सकते हैं तथा समाज में पुनः प्रेम, सम्मान और मानवीय संवेदनाओं की स्थापना कर सकते हैं।

संदर्भ

1. डॉ. हरदेव बाहरी, लोकभारती राजभाषा शब्दकोष (अंग्रेज़ी-हिंदी), इलाहाबाद : लोकभारती प्रकाशन, पृ. 466
2. फादर कामिल बुल्के, अंग्रेजी-हिंदी कोष, नई दिल्ली : एस चंद एण्ड कम्पनी प्रा• लि•, पृ. 433
3. डॉ. हरदेव बाहरी, लोकभारती राजभाषा शब्दकोष (अंग्रेज़ी-हिंदी), इलाहाबाद : लोकभारती प्रकाशन, पृ. 455
4. कृष्ण बलदेव वैद, अंत का उजाला, (नई दिल्ली : राजकमल प्रकाशन, 2012), पृ. 9
5. वही, पृ. 24
6. वही, पृ. 36
7. वही पृ. 97
8. वही पृ. 66
9. वही पृ. 106
10. सं डॉ एस. वाय होनगेकर, 21वीं शती का हिंदी साहित्य : नव विमर्श, (वाराणसी : ए.बी.एस पब्लिकेशन 2018), पृ. 308